बरसाती लोबिया एक लाभकारी फसल

अधिकांश कृषक भाई रबी की अच्छी फसल की चाहत में खरीफ में खेत को पड़ती छोड़ देते हैं ऐसे में लोबिया हमारे सामने एक ऐसी सब्जी फसल है जिसकी खेती कर फलियों को बेचकर अपनी आमदनी को बढ़ाएगी ही साथ ही दलहनी फसल होने के कारण इससे खेत की उर्वराशक्ति भी बढ़ेगी एवं ढलवा खेतों में बरसात में बखरी बोने से मिट्टी का कटाव भी रोका जा सकेगा।

लोबिया में सूखे को सहन करने की क्षमता होती है। अतः कम वर्षा होने पर भी बिना सिंचाई के इसे खरीफ मौसम में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यह फसल 50-75 दिन में प्राप्त हो जाती है। इसके साथ ही दलहनी फसल होने के कारण खेत की उर्वराशक्ति में सुधार होता है ।

उन्नतशील प्रजातियां

काशी गौरी, काशी कंचन, पूसा कोमल, अर्का गरिमा।

खेत की तैयारी

लोबिया की खेती के लिए बलुई दोमट से लेकर दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। खेत की तैयारी के लिए 2 से 3 जुताई कर पाटा लगा देते हैं ताकि खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाए।

बुवाई का समय

लोबिया की बुवाई के लिए जून से जुलाई का समय उपयुक्त होता है।

बीज की मात्रा

7 से 8 किग्रा प्रति एकड़ खेत की बुवाई के लिए पर्याप्त होता है।

बुवाई की विधि

इसकी बुवाई पंक्ति से पंक्ति 60 सेमी एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेमी रखनी उपयुक्त है ।

खाद एवं उर्वरक की मात्रा

लोबिया की अच्छी फसल के लिए खेत तैयार करने के 15 दिन पहले 80-100 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद खेत में मिला दें इसके अतिरिक्त 10 किग्रा नत्रजन, 24 किग्रा फॉस्फोरस एवं 24 किग्रा पोटाश देना चाहिए ।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण के लिए बुवाई के तुरंत बाद 48 घंटे के अंदर पेंडिमेथालिन 1.4 ली प्रति एकड़ 200 ली पानी में घोलकर छिड़काव करें।

तुड़ाई करने का समय

अगेती किस्मों में फलियां लगभग 40 से 45 दिन बाद तुड़ाई योग्य तैयार हो जाती हैं पूरे फसल काल में लगभग बौने किस्मों की 3 से 4 तथा फैलने वाली किस्मों की 12-16 तुड़ाई करनी चाहिए।

कीट प्रबंधन

माहू: यह कीट मुलायम पत्तियों का रस चूसती हैं।

नियंत्रण

डाईमिथोएट 30 ई.सी. 2 मिली प्रति लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 100 मिली प्रति एकड़ 150 लीटर पानी में मिलाकर दवा का छिड़काव करे।

फली छेदक

यह कीट फली को छेदकर बीज खाता है ।

नियंत्रण

डेल्टामेथ्रिन 150 मिली या इन्डोक्सकार्ब 100 मिली को 150-200 लीटर पानी में मिलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

लीफ मईनर

यह पौधे की पत्तियों पर सफेद धागे की तरह बारीक सुरंग बनाता है ।

नियंत्रण

इमिडाक्लोप्रिड 100 मिली प्रति एकड़ 150 लीटर पानी में मिलाकर दवा का छिड़काव करें।

रोग प्रबंधन

चूर्णिल आसिता: पौधे की पत्तियां, तने एवं फलियों पर सफेद पाउडर के रूप में बढ़ता है ।

नियंत्रण

इसके नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक का चूर्ण 3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें या कैलिक्सीन 0.1% (आधा मिली दवा प्रति लीटर पानी) के घोल का 10 दिनों के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें।

उकठा एवं जड़ सड़न

इससे प्रभावित पत्ती पीली पड़ जाती हैं एवं पौधा सूख जाता है। साथ ही पौधों की जड़ें सड जाती हैं।

नियंत्रण

इसके नियंत्रण हेतु प्रथम जुताई के साथ ट्राईकोडरमा पाउडर 2 किग्रा प्रति 30-40 किग्रा सड़ी गोबर की खाद के साथ मिलाकर प्रति एकड़ की दर से खेत में मिलाएं।

॥ ॥ ॥